International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-4, Issue-3 June - 2017
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

इतिहास के विविधार्थ

डॉ0 देवेन्द्र सिंह
व्याख्याता हिन्दी
महारानी श्री जया राजकीय महाविघालय , भरतपुर राजस्थान

संसार में कुछ भी इतिहास से बाहर नहीं है। संसार में विद्यमान समस्त जीव, जगत, वस्तु और विचार इतिहास के अन्दर हैं और इन में से प्रत्येक का जहाँ अलग–अलग इतिहास है; वहीं ये सब एक सामूहिक इतिहास के अंग भी हैं। मनुष्य की इतिहास चेतना एक ऐसी प्रकृति–प्रदत्त अन्तर्निहित शक्ति है जिसके सहारे वह अपने अतीत और उसके माध्यम से स्वयं अपने को अनवरत अन्वेषित करता चलता है। इतिहास चेतना के अभाव में मनुष्य की सार्थकता ही समाप्त हो जाती और मानव सभ्यता उस मुकाम को कभी हासिल न कर सकती थी जिस पर वह आज खड़ी है। यह सत्य है कि इतिहास से मुक्ति मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है लेकिन उसकी मुक्ति का मार्ग भी इतिहास की निरन्तर साधना में निहित है। **'अस्मिता बोध की पहली शर्त है इतिहास बोध!'**

(अ) इतिहास : अर्थ विवेचन

प्रत्येक शब्द विषिष्ट भाषा–समूह का सामूहिक उत्पाद है जिसे वह भाषा समूह अपनी दीर्घकालीन परम्परा से प्राप्त करता है। दीर्घावधि, मानव–विकास एवं परिस्थितियों के परिवर्तन के परिणामस्वरूप अधिकाँष शब्द अपनी जीवन–यात्रा में अर्थ संकुचन, अर्थ विस्तार एवं अर्थ विस्थापन के षिकार होते रहते हैं। यह एक स्वाभाविक भाषिक प्रक्रिया है। एक भाषिक प्रक्रिया के चलते एक शब्द अपनी विकास यात्रा में अनेक अर्थ–छवियाँ प्राप्त करता चलता है। इस तरह हर शब्द और उसके अर्थ का भी एक इतिहास बन जाता है। **इतिहास** नामक शब्द भी इसका अपवाद नहीं है। **इतिहास** अपने अर्थ वैविध्य की दृष्टि से काफी समृद्ध है। इसके विभिन्न अर्थों को हृदयंगम करने के लिए हमें इसके व्युत्पत्तिपरक, कोषगत, पारिभाषिक एवं प्रयोगपरक अर्थों का विवेचन करना परमावष्यक है।

1. व्युत्पत्तिपरक अर्थ

किसी शब्द के अर्थज्ञान[1] के लिए उसका व्युत्पत्तिपरक अर्थ प्रारम्भिक एवं विष्वसनीय माना जाता रहा है। **इतिहास** का समानार्थी अंग्रेजी में **HISTORY** एवं अरबी में **तवारीख** शब्द प्रचलित हैं। यहाँ हम इन तीनों शब्दों के व्युत्पत्तिपरक अर्थ को समझने का प्रयास करेंगे –

□□संस्कृत शब्दकोष **संस्कृत–षब्दार्थ–कौस्तुभ**[2] के अनुसार, "इतिहास (पुं॰) (इतिह पारम्पर्योपदेष आस्तेऽस्मिन इति विग्रहे इतिह आस्+घञ) – पुस्तक जिसमें बीते हुए काल की प्रसिद्ध घटनाओं और तत्कालीन प्रसिद्ध पुरुषों का वर्णन हो। वह ग्रन्थ जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का उपदेष प्राचीन कथानकों से युक्त हो, **तवारीख**।"

□□**"इति ह एवमासीत इति च उच्यते स इतिहासः।** अर्थात् अतीत की निष्चित रूप से होने वाली घटना का नाम इतिहास है।"[3]

□□**इतिहास** शब्द **इति+ह+आस** के योग से निर्मित है। जिनका अर्थ है, इति – इस प्रकार से+ह – निष्चय+आस था, वर्तमान था। अर्थात् अतीत की निष्चय रूप से होने वाली घटना का नाम इतिहास है।[4]

□□इतिहास के अंग्रेजी समानार्थी शब्द **HISTORY** की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द **HISTORIA** (हिस्टोरिया) तथा ग्रीक शब्द **HISTOR** (हिस्तोर) से मानी गई है & **HIS-TO-RY** (histəri:, histri:). . .(fr.L.historia, fr.GK history – wiseman, Judge)[5] **HISTOR** (हिस्टोर) – वह विषेषज्ञ होता था जिससे झगड़ों के निबटारे के लिए अभ्यर्थना की जाती थी।"[6]

□□डॉ॰ वेदप्रकाष ने अपने शोध–प्रबन्ध में HISTORY शब्द के सम्बन्ध में लिखा है, "इस शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक भाषा के HISTOR अथवा HISTORIA से मानी जाती है। कुछ विद्वानों ने ग्रीक **हिस्टरी** का शब्दार्थ, **बुनना या खोज करना** बताया है जिससे उनका तात्पर्य है – ज्ञात घटनाओं को सार्थक, सुव्यवस्थित और सुसंबंध रूप में प्रस्तुत करना। जर्मन शब्द GESCHICHTE के अर्थ **होना** या **घटित होना** ने भी इतिहासास सम्बन्धी धारणा के विकास में योगदान प्रदान किया हैं। इतिहास के लिए अंग्रेजी में HISTORY, ANNALS, TRADITION, STORY, FABLE आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है।"[7]

□□उर्दू में प्रयुक्त होने वाली अरबी समानार्थी शब्द **तवारीख** का अर्थ "तवारीख–(अरबी) स्त्री॰, तारीख का बहुवचन, तिथियाँ, इतिहास, किसी देष की तारीख।" "तारीख–(स्त्री॰) महीने की तिथि, पिछले हालात का जिक्र, इतिहास, इतिहास की किताब, इतिहास–विज्ञान, **अबजद** के हिसाब से निकाला हुआ किसी वाकिए का साल, वह इल्म जिसमें पिछले हालात का वाकियात का वर्णन हो।"[8] उर्दू में **नामा**, **वाकयात**, **फतुहात** तथा **तजकिरा** आदि शब्द भी मिलते–जुलते अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

विवेचन

इस तरह स्पष्ट है कि **इतिहास** के व्युत्पत्तिपरक अर्थ में **अतीतपरकता, तथ्यात्मकता** और **सत्यता** का संकेत है; **HISTORY** शब्द के मूल अर्थ में **अतीपरकता, क्रमबद्धता**, **सुव्यवस्था, खोज** और **बुद्धिमता** के अर्थ समाहित हैं तथा **तवारीख** में **अतीतपरकता**, **क्रमबद्धता**, **समग्रता** और **अतीत के महत्त्वपूर्ण दिनों** की ध्वनि स्पष्ट रूप में उपस्थित है। वस्तुतः शब्द अपने स्रोत समाज के चरित्र और संस्कृति के बोधक होते हैं। **इतिहास** शब्द में तथ्य और सत्य पर बल होना; HISTORY में सुव्यवस्था और निर्णयात्मकता को महत्त्व देना तथा **तवारीख** में समग्रता एवं अतीत के महत्त्वपूर्ण दिनों ध्वनि होना क्रमषः भारतीय, पाष्चात्य एवं अरबी समाज की सहज वृत्तियों की ओर भी सूक्ष्म संकेत हैं।

2. कोषगत अर्थ

'कोष एक ऐसा ग्रन्थ होता है जिसमें शब्दों के मुख्य अर्थ लिखे रहते हैं।'[9] कोषग्रन्थ शब्दार्थ के लिए प्राथमिक, सर्वाधिक विष्वसनीय और सम्पूर्ण संदर्भ स्रोत हैं। अतः 'इतिहास' के कोषगत अर्थों को देखना आवष्यक है।

मानक हिन्दी कोष, भाग प्रथम – "इतिहास–पुं॰ (सं इतिह, उ॰स॰, इतिहास, इतिह+आस् (बैठना) + घञ्) (1) किसी व्यक्ति समाज या देष की महत्त्वपूर्ण, विषिष्ट या सार्वजनिक क्षेत्र की घटनाओं तथ्यों आदि का कालक्रम से लिखा हुआ विवरण। (2) किसी वस्तु या विषय की उत्पत्ति, विकास आदि का कालक्रम के अनुसार होने वाला विवेचन।"[10]

सहज समान्तर कोष – "इतिहास–सं इतिवृत्त, काल–वर्णन, तवारीख, तारीख, पुराकथा, पुरावृत्त, हिस्ट्रिरी, सपर्याय–पुरातत्त्व, प्रागितिहास, परम्परा, भूतकाल, वृतान्त, स्मृति।"[11]

मानक अंग्रेजी–हिन्दी कोष & history –(his'tori) [L. and Gr. histƏyi, from histor, knowing, cogn. with Id, eidenai, to know] (1) इतिवृत्त, पुरावृत्त, इतिहास (2) प्राचीन बात सच्ची कहानी, हाल, वाकया (3) सार्वजनिक घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण या उल्लेख, (4) (बहव॰) राष्ट्रों के निरन्तर विकास का अध्ययन, (5) किसी राष्ट्र, व्यक्ति या वस्तु के अतीत का पूरा वृतान्त (6) घटनापूर्ण अतीत जीवन (7) इतिहास, भूतकालिक घटनाओं का संग्रह, मानव कार्यकलापों का संकलन, (8) (बहुव नहीं) प्राकृतिक घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन (9) ऐतिहासिक नाटक।[12]

WEBSTER'S DICTIONARY- "His-to-ry (histeri:, histri) –n.a. record of past events, usually with an-int erpretation of their cause and

an assessment of their importance" the study and writing of such records ||Past events|| a narrative of real or fictitious events connected with a particular person, contry, object etc. (fr.L. historia fr.GK. history (wisemen, Judge)"[13]

OXFORD DICTIONARY & THESAURUS – "HISTORY - 1. Continuous record of (esp.public) events. 2. Study of past events. 3. Total accumulation of these. 4. The past 5. (esp.eventful) past or record. **Synonym Section -** 1.annals, biography, chronicles, diaries, narratives, resords, 4. Antiquity, bygone days, heritage, historical events, the old days, the past. 5. Back ground, past, record."[14]

विवेचन

मानक हिन्दी कोष में एक अर्थ व्यक्ति व देष तथा दूसरा अर्थ वस्तु व विषय के क्रमिक विवरण व विवेचन से सम्बन्धित है। **मानक अंग्रेजी–हिन्दी कोष** में पहला अर्थ शाब्दिक तथा शेष आठ अर्थों से इतिहास की विषय वस्तु का ज्ञान होता है। **सहज समांतर कोष** में विभिन्न भाषाओं में प्रचलित पर्यायवाची शब्द ही दिये गए हैं। Webster's Dictionary में विस्तारपूर्वक पूर्व में घटित घटनाओं का वर्णन, जो उनके कारण एवं महत्त्व के मूल्यांकन के साथ हो उसे, पूर्व घटनाओं के विवरणों के अध्ययन एवं लेखन को, पूर्व घटनाओं को; वास्तविक अथवा काल्पनिक घटनाओं की ऐसी वर्णनात्मक कथा जो किसी विषेष व्यक्ति, देष एवं उद्देष्य से संबंधित हो, को इतिहास कहा हैं। यहाँ काल्पनिक कथा को भी शामिल किया हे जबकि वह इतिहास विरोधी प्रवृत्ति मानी जाती है। Oxford Dictionary & Thesaurs में समाज की क्रमबद्ध घटनाओं, भूतकाल, घटनापूर्ण पूर्व समय अथवा उसके लेखन को इतिहास कहा गया है। यहाँ क्रमबद्धता को भी रखा है।

संक्षिप्त में हम कह सकते हैं कि हिन्दी कोषों में पूर्व घटनाओं के विवरण पर बल है जबकि अंग्रेजी कोषों में विषय वैविध्य एवं उनके अध्ययन–विष्लेषण पर बल हैं। कोषगत अर्थों का आधार व्यवहारिक इतिहास लेखन ही है। यहाँ भी हिन्दी व अंग्रेजी जाति की प्रवृत्ति द्रष्टव्य है।

3. विष्वकोषों में अर्थ

किसी भाषा के शब्दकोष में उस भाषा के लगभग सभी प्रचलित शब्दों के मुख्य एवं अन्य अर्थों की जानकारी अति संक्षिप्त रूप में दी जाती हैं। उच्च स्तरीय अध्ययन–अध्यापन एवं शोध कार्यों में प्रयुक्त शब्दों के सटीक, प्रमाणिक, सम्पूर्ण एवं निर्णयात्मक अर्थ की जानकारी हमें उस भाषा के पारिभाषिक एवं विष्वकोषों से ही मिल पाती हैं। अतः यहाँ **इतिहास** के अर्थ हेतु इन कोषों पर दृष्टिपात करना आवष्यक है।

हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली – "अतीत के किसी भी तथ्य, तत्त्व एवं प्रवृत्ति के वर्णन, विवरण, विवेचन व विष्लेषण को, जो कि कालविषेष या कालक्रम की दृष्टि से किया गया हो, इतिहास कहा जा सकता हैं।"[15]

हिन्दी साहित्य कोष, भाग–1 – "मोटे तौर पर परिनिश्र्वत तथ्यों की सुसम्बन्द्ध काल क्रमानुसारी श्रृंखला का नाम इतिहास है। . . .वस्तुतः वर्तमान को अतीत में जो ज्ञातव्य प्रतीत होता है, वही इतिहास का विषय बन सकता है।"[16]

हिन्दी भाषा एवं साहित्य विष्वकोष भाग–प्रथम – शाब्दिक दृष्टि से इतिहास का अर्थ है – **ऐसा ही था** या **ऐसा ही हुआ**; इस दृष्टि से अतीत के किसी भी वास्तविक विवरण को इतिहास की संज्ञा दी जा सकती है। किन्तु अतीत के गर्भ में इतना कुछ छिपा हुआ है उसे समस्त रूप में प्रस्तुत करना किसी भी इतिहासकार के वष की बात नहीं है। इसलिए विभिन्न इतिहासकार अपनी–अपनी रुचि एवं दृष्टि के अनुसार अतीत के कुछ पक्षों को अपने–अपने शब्दों में प्रस्तुत करते हैं।[17]

भारतीय संस्कृति कोष – "**छांदोग्य उपनिषद** में इतिहास और पुराण को पाँचवा वेद कहा गया है। **ऐतरेय ब्राह्माण** के भाष्यकार के अनुसार वेद के अन्तर्गत देवासुर संग्राम का जो वर्णन है वह इतिहास कहलाता है। **शंकराचार्य** भी पुरुरवा, उर्वषी आदि के संवाद भाग को इतिहास कहते हैं। वायु पुराण में जिन 18 विद्याओं के गणना की गई है उनमें साहित्य का नाम अलग से नहीं है। अधिकांष विद्वान प्राचीनकाल के इतिहास का आश्रय रामायण और महाभारत से लेते हैं। किन्तु इनमें वर्णित वृतान्त भी पुराणोक्त चमत्कारों से अप्रभावित नहीं हैं। इसलिए प्राचीन इतिहास की एक बहुत कुछ सर्वमान्य परिभाषा यह थी कि लौकिक वर्णन को इतिहास की श्रेणी में रखा जाए और अलौकिक को पुराण की।"[18]

□□**ENCYCLOPAEDIA BRITANNICA -** "The word **history** is used in two senses. It may mean either the record of events or the events themeselevs. The term was originally limited to inquiry and statement; it was only in comparatively modern times that the mening of the world was extended to

include the phenomena that form their subject of this article' which is divided into the following sections."[19]

विवेचन

इन कोषों में दिये गये अर्थों को हम सामान्यीकृत परिभाषाएँ कह सकते हैं। **हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली** में इतिहास दर्षन के संदर्भ में अतीत की कालक्रमिक प्रस्तुति को इतिहास कहा है। **साहित्य कोष** में ज्ञातव्य तथ्यों की कालक्रमिक एवं सुसंबद्धता श्रृंखला को इतिहास माना है। **हिन्दी भाषा एवं साहित्य विष्वकोष** में रुचि और दृष्टि के अनुरूप वास्तविक अतीत के आंषिक पक्ष की प्रस्तुति को इतिहास कहा है। **भारतीय संस्कृति कोष** में प्राचीन भारतीय साहित्य के संदर्भ देकर इतिहास और पुराण का भेद बताते हुए लौकिक वर्णन को इतिहास का मुख्य लक्षण रेखांकित किया है। **Encyclopaedia Britannica** में घटनाओं के अभिलेख अथवा स्वयं घटनाओं को इतिहास कहा है। उसके अनुसार, मूल रूप में उसका अर्थ अतीत की खोज और उसके कथन तक सीमित था लेकिन आधुनिक समय में उसमें वैषिष्ट्य और महानता का लक्षण भी शामिल हो गया है।

इस तरह इनके आधार पर इतिहास के अर्थ में **अतीपरकता, तथ्यात्मकता, क्रमबद्धता, सुसंबद्धता, खोजपरकता** जैसे मूल लक्षणों के साथ **वैयक्तिकता महानता** एवं **वैषिष्ट्य** को भी शामिल करना होगा।

4. पारिभाषिक अर्थ

"परिभाषा एक शाब्दिक प्रक्रिया है जिसका अभिप्राय किसी विषय के मूल तत्त्व को स्पष्ट करना है।"[20] "परिभाषा का मुख्य उद्देष्य किसी विषय को सरल तथा बोधगम्य बनाना है।"[21] उच्च स्तरीय अध्ययन के दौरान जब कोई शब्द अपना विषिष्ट अर्थ प्राप्त कर लेता है तो उसे परिभाषित करना अपरिहार्य हो जाता है। कुछ शब्दों को परिभाषित करना **गागर में सागर** भरने के समान है। प्रथम तो अर्थ का सागर शब्दों की गागर में भरता ही नहीं और यदि कुछ प्रयास किया जाए तो दूसरे ही पल बड़ी से बड़ी गागर छोटी और दरकती नजर आती है। अनेक पाष्चात्य और भारतीय विद्वानों ने अपनी अपनी मति–अनुरूप **इतिहास** को परिभाषित करने के सार्थक प्रयास किये हैं।

(i) पाष्चात्य चिन्तन में इतिहास की परिभाषा

पाष्चात्य जगत में इतिहास चिन्तन की सुदीर्घ और व्यवस्थित परम्परा रही है। आधुनिक इतिहास चिन्तन की लगभग सभी अवधारणाएँ पष्चिमी उपज मानी जाती हैं। डॉ॰ चौबे ने अपनी पुस्तक

इतिहास–दर्षन में इस बृहद् इतिहास चिन्तन को विभिन्न अवधारणाओं के आधार पर विभिन्न वर्गों में प्रस्तुत किया है।

पहला वर्ग इतिहास को मात्र **कहानी** स्वीकार करता है। **ट्रेविलियन, इतिहास को अपरिर्वनीय अंष में कहानी** मानते हैं तो **हेनरी पिरेन** और अधिक स्पष्ट करते हुए इसे **समाज में रहने वाले मनुष्यों के कार्यों एवं उपलब्धियों की कहानी** कहते हैं। **फ्रेंच अकादमी, स्मरण योग्य वस्तुओं की कहानी** को इतिहास कहती है तो **ओलिवर** इस कहानी को **उपदेष और नैतिक विचारों से दूर** रखने की सलाह देते हैं। इस तरह इनके मत में मानवीय उपलब्धियों की यथातथ्य प्रस्तुति इतिहास है।

दूसरा वर्ग इतिहास को **सामाजिक विज्ञान** मानता है। **यार्क पावेल** के अनुसार, इतिहास में उन शक्तिषाली प्रवृत्तियों का उल्लेख होना चाहिए जिन्होंने विभिन्न युगों की परिस्थितियों को प्रभावित किया है। **सर चार्ल्स फर्थ** की नजर में, इतिहास मानवीय सामाजिक जीवन का वर्णन हैं। तथा 'समाज के विकास में बाधक अथवा साधक विचारों का अन्वेषण' ही उसका उद्देष्य हैं। **हेनरी पिरेन** भी 'अतीत–मानव–समाज के विकास के व्याख्यात्मक विवरण' को इतिहास कहते हैं। इस वर्ग के समर्थक विद्वानों के अनुसार इतिहास व्यक्तियों का नहीं सम्पूर्ण समाज के समग्र विकास के उत्थान–पतन के कारणों का वैज्ञानिक प्रवधि से किया गया अध्ययन हैं।

तीसरा वर्ग इतिहास को **ज्ञान** मानने का पक्षधर है। **शेख अली** के अनुसार, इतिहास दर्षन है जो उदाहरणों द्वारा ज्ञान प्रदान करता है। **चार्ल्स फर्थ** इसे एक विषिष्ट ज्ञान शाखा ही नहीं बल्कि ऐसा ज्ञान मानते हैं जो मनुष्य के दैनिक जीवन में उपयोगी है। **कॉलिंगवुड़** इतिहास को अद्वितीय ज्ञान इसलिए मानता है क्योंकि यह 'मानव के सम्पूर्ण ज्ञान का स्रोत' है। **रेनियर** इतिहास को 'सभ्य समाज में रहने वाले मनुष्यों के अनुभव की कहानी' मानते हैं। इनके मत से अतीत की घटनाओं से षिक्षा प्राप्त करना इतिहास अध्ययन का सार एवं अभीष्ट हैं। यह सच्चाई है कि आदमी इतिहास के आलोक में अंधेरे में अपनी राह खोजता है। प्रयोजनवादी अनुभव को ही सत्य मानते हैं।

चौथा वर्ग इतिहास को **विचार** मानता है। कॉलिगवुड संभवतः अपने सर्वाधिक प्रसिद्ध वाक्यांष में कहता है कि, **सम्पूर्ण इतिहास विचारधारा का इतिहास** है। यह भी कि "इतिहासकार ऐतिहासिक अभिनेता के विचारों की पुनरावृत्ति करता है।" इस वर्ग का मानना है कि घटनाओं की मूल प्रेरणा विचार ही होते

हैं; अतः विचारों का अध्ययन ही लक्ष्य होना चाहिए तथा विचारों के अध्ययन से कार्यों का अध्ययन सुगम और बोधगम्य बनता है। वैचारिक प्रगति मनुष्य के विकास का सच्चा प्रतिमान है।

पाँचवा वर्ग इतिहास की **समसामयिकता** पर बल देता हैं। वास्तव में इतिहास का जन्म वर्तमान की कोख में ही होता हैं। **क्रोंचे** के अनुसार, सम्पूर्ण इतिहास समसामायिक इतिहास होता है। **मैंडोलबाम** ने लिखा है कि, "अतीत का अध्ययन अतीत के लिए नहीं अपितु वर्तमान समाज की उपयदेयता के लिए किया जाता हैं।" इतिहास–दर्षन के प्रख्यात विद्वान **ई॰एच॰कार** समझाते हैं कि, "वस्तुतः इतिहास, इतिहासकार तथा तथ्यों के बीच अन्तर्क्रिया की अविच्छन्न प्रक्रिया तथा वर्तमान और अतीत के बीच अनवरत परिसंवाद हैं।" **एल्टन कालबोध** को और व्यापक करते हुए अपेक्षा करते हैं कि, 'वर्तमान के संदर्भ में अतीत का अध्ययन सुखद भविष्य के लिए होना चाहिए।' अर्थात् तथ्य अतीत के, संदर्भ वर्तमान के और कल्पना भविष्य की, इतिहास तीनों कालों को अपने में समेटे हुए है।[22]

इन तमाम् परिभाषाओं को देखकर कहा जा सकता है कि, ये परिभाषाएँ इतिहास के किसी एक खास पक्ष पर बल देती हैं। सभी के योग से ही सम्पूर्ण परिभाषा प्राप्त की जा सकती हैं। यह स्पष्ट है कि इन विद्वानों ने इतिहास को एक परिपूर्ण विषय के रूप में स्थापित करने में सराहनीय कार्य किया हैं।

(ii) भारतीय चिन्तन में इतिहास का प्रयोग और परिभाषा

"पारिभाषिक अर्थ में इतिहास का अध्ययन–विषय अत्याधुनिक तथा पूर्णतः पाष्चात्य प्रपंच है।"[23] यह सच है कि इतिहास दर्षन को लेकर भारतीय विद्वानों ने कोई मौलिक स्थापनाएँ प्रस्तुत नहीं की हैं। फिर भी भारत में इतिहास शब्द का प्रयोग बहुत पुराना है तथा आधुनिक युग में भी अनेक विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। भारतीय चिन्तन परम्परा में **इतिहास** को समझने के लिए उसके प्रयोगों पर दृष्टिपात करना होगा।

प्रयोगपरक अर्थ – षब्द की व्युत्पत्ति और कोष उसके अर्थ–ज्ञान के प्राथमिक और विष्वसनीय साधन होने के बावजूद किसी शब्द के प्रयुक्त अर्थों को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। बल्कि कहना चाहिए कि प्रयोगों के आधार पर शब्दों के अर्थ बदलते रहते हैं और कोष ग्रन्थकार उन्हें अपने ग्रन्थों में शामिल भी करते रहे हैं।

इतिहास शब्द के प्रयोग को लेकर **डॉ॰ आनंदनारायण शर्मा** ने अपनी पुस्तक **हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्षन** (पृ॰ 1–4) में विस्तृत विवेचन किया हैं। उनके अनुसार, प्राचीन भारतीय साहित्य में **इतिहास**

शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है। वैदिक साहित्य में इतिहास शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **यास्क** ने **ऋक–संहिता** में माना है। जहाँ त्रिविध ब्रह्म के अन्तर्गत इतिहास मिश्र मंत्र पाये जाते हैं। दषम मंडल के एक मंत्र (निरुक्त 4/6) को **यास्क** ने ऋक्, गाथा तथा इतिहास का सम्मिश्रण बताया हैं। **अथर्ववेद** (15–6–12) में **इतिहास** शब्द का प्रयोग ऐतिहासिक लेखनों के लिए किया गया हैं। **छान्दोग्य उपनिषद** में **सनत्कुमार नारद संवाद** (7/1/2) में इतिहास पुराण नामक पंचम वेद का उल्लेख है। यहाँ इतिहास शब्द का प्रयोग ज्ञान की विषिष्ट और महत्त्वपूर्ण शाखा के रूप में किया गया है। **विष्णु–पुराण** में **इतिहास** शब्द का प्रयोग ऐसी रचनाओं के लिए हुआ हैं जो चरित्र प्रधान, उपदेष प्रधान एवं धार्मिक उद्देष्य से रचित हैं अर्थात् कोरा तथ्यात्मक विवरण इतिहास नहीं है। **महाभारत में वेदव्यास** धर्म, अर्थ काम एवं मोक्ष के उपदेष से युक्त अतीत कथा को इतिहास कहते हैं। यहाँ भी इतिहास कोरा तथ्य परक नहीं बल्कि मानव कल्याण के उपदेष से समन्वित हैं। **बृहदारण्यक** (2–4–10) में बताया है कि उर्वषी और पुरुरवा का संवाद तो इतिहास है, किन्तु जगत की आद्यावस्था से लेकर सृष्टि के विकास को सूचित करने वाले अंष पुराण हैं। यहाँ इतिहास शब्द का प्रयोग लौकिक और मानवीय घटनाओं के विवरण के अर्थ में किया गया हैं। **पुराण** आज के **सम्पूर्ण इतिहास** के समानार्थी प्रयुक्त हुआ है।

काव्यमीमांसा में राजषेखर द्वारा दो प्रकार के इतिहासों का उल्लेख किया गया हैं। एक नायकवाली कथा को **परिक्रिया**, बहुनायक वाली कथा को **पुराकल्प** कहा है। यहाँ इतिहास की विकसित होती परम्परा और उसके प्रकारों का पता चलता है। इन्हें हम **व्यक्ति–इतिहास** तथा **सामाजिक इतिहास** समझ सकते हैं। **अर्थषास्त्र में कौटिल्य** ने **पुराण** को भी वास्तविकता से सम्बद्ध के आधार पर **इतिहास** में शामिल कर लिया है यहाँ पुराण, इतिवृत्त, आख्यायिका (कथाएँ), उदाहरण (षिक्षाप्रद दृष्टांत), धर्मषास्त्र तथा अर्थषास्त्र को इतिहास संज्ञा से विषेषित बताया है। यहाँ **समग्र इतिहास** की अवधारणा व्यंजित हो रही है। इतिहास मात्र राजनैतिक इतिवृत्त नहीं है। **रामचरित मानस में तुलसीदास** ने **भयउ विकल बरनत इतिहासा** (अयोध्याकांड) में पुरानी घटना के वर्णन को इतिहास कहा है। इसके अलावा **पूछत कहत नवल इतिहासा।** (सुन्दरकांड) में **नवीन व विषिष्ट** घटनाक्रम को इतिहास माना है। इस तरह तुलसीदास की दृष्टि में **प्रभावकारी पुरावृत्त** एवं **महत्त्वपूर्ण नवीन घटनाएँ** इतिहास कही जा सकती हैं।

इस तरह हम कह सकते हैं कि **इतिहास** वैदिक साहित्य में **विषिष्ट ज्ञान शाखा** के रूप में **पंचम वेद** की उपाधि धारण कर चुका है। पौराणिक और महाभारत काल में मानव कल्याण का उद्देष्य प्राप्त

करता हैं। कौटिल्य के यहाँ उसके विषय क्षेत्र का विस्तार देखा जा सकता हैं। निष्कर्षतः यहाँ इतिहास अतीत का तथ्य वर्णन मात्र कभी नहीं रहा वरन् उसका उपयोग समाज के कल्याणार्थ ही माना गया हैं।

समानार्थी शब्द विवेचन : इतिहास, पुराण और आख्यान – प्राचीन भारतीय वाङमय में इतिहास के समानार्थी अन्य शब्द **पुराण** और **आख्यान** का भी भरपूर प्रयोग हुआ है। **पुराण** का सामान्य अर्थ **अतीत की घटित घटना** से लिया जाता था।[24] उसी तरह आख्यान का शाब्दिक अर्थ **कथन, निवेदन या उक्ति**' होने के साथ–साथ इसका प्रयोग लोक प्रसिद्ध **कथा कहानी – यथा नलोपाख्यान** – के लिए होता था। जिसका सम्बन्ध अतीत से ही होता था।[25] प्रयोग की दृष्टि से भी ये तीनों शब्द लगभग एक जैसी रचनाओं के लिए प्रयुक्त हुए हैं, जिनका सम्बन्ध अतीत से रहा है। महाभारत के लिए ये तीनों ही शब्द प्रयुक्त हुए हैं।[26]

कल्हण, काषीप्रसाद जायसवाल तथा वासुदेव कृष्ण मीराषी द्वारा पुराणों के ऐतिहासिक महत्त्व को स्वीकारने का उल्लेख करने के बाद **डॉ॰ आनंदनारायण शर्मा** अपना विद्वतापूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं कि – "मेरी दृष्टि में इतिहास, पुराण और आख्यान में आधारभूत सामग्री का उतना अन्तर नहीं होता, जितना दृष्टिकोण और वर्णन शैली का। इतिहास में दृष्टि अपेक्षाकृत अधिक वस्तुन्मुखी होती थी, पुराण में आध्यात्मिक और नैतिक तत्त्व की प्रधानता है। पुराणों में जहाँ पूरी की पूरी वंषावलियाँ, सर्ग और प्रतिसर्ग की कथा सहित वर्णित होती है, वहाँ **आख्यान** विषेष व्यक्तियों अथवा घटनाओं से सम्बद्ध होते है, जैसे **रामोपाख्यान**, **नलोपाख्यान** आदि। आख्यान में एक प्रकार का सावयिक गठन होता है, जिसका इतिहास और पुराण में रहना आवष्यक नहीं है फिर अधिकतर पुराणों में संवाद की शैली अपनाई गई है लेकिन इतिहास के लिए ऐसी कोई प्रतिबद्धता नहीं। इसके विपरीत इतिहास के लिए विवरणात्मक शैली उपादेय होती है और आख्यान के लिए वर्णनात्मक। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि शब्द भेद और शैली भेद कि बावजूद **इतिहास, पुराण** और **आख्यान** एक सीमा तक समानार्थी हैं। ये सभी अतीत की घटनाओं पर आधारित हैं और इनके माध्यम से विगत का व्याख्यान किया जाता हैं।"[27]

इतिहास, पुराण और आख्यान को समझते समय हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारे यहाँ इस तरह के प्रयोगों और उपलब्ध साहित्य की सुदीर्घ परम्परा रही है। इन तीनों (इतिहास, पुराण, आख्यान) की सीमाएँ टूटने का अर्थ अज्ञानता नहीं विकास का चरमोत्कर्ष मानना चाहिए। आज भी हम देख रहे हैं कि अपने विकास के प्रत्येक दौर में विधाओं और विषयों की सीमा और रूपों में परिवर्तन स्वाभाविक रूप से घटित होता रहता है। यह कल्पना करना असंगत नहीं है कि एक दिन साहित्यक

विधाएँ आपस में इतनी घुलमिल जायेंगी कि उनके बीच स्पष्ट सीमारेखा खींचना मुष्किल हो जायेगा। अतः प्राचीन भारतीय साहित्य में इतिहास पुराण की परम्परा को आरम्भिक अवस्था मानना इतिहास सम्मत नहीं है।

भारतीय विद्वानों की परिभाषाएँ – भारत में **इतिहास** का अध्ययन पाष्चात्य जगत की तुलना में काफी देर से आरम्भ हुआ है। आधुनिक इतिहास चिन्तन लगभग पूरी तरह पष्चिमी विद्वानों पर निर्भर है इसीलिए भारतीय विद्वानों की मौलिक स्थापनाएँ नहीं के बराबर है। यहाँ हम कुछ विद्वानों के इतिहास सम्बन्धी विचारों की चर्चा कर इस प्रकरण को पूर्ण करेंगे।

नलिन विलोचन शर्मा ने इतिहास के तीन अर्थों पर विचार किया है। प्रथम **घटनाओं का क्रमिक विवरण**, द्वितीय **चुनिंदा घटनाओं के प्रवाह का आलेखन** तृतीय अर्थ है **गवेषणात्मक ज्ञान** है।[28] **प्रेमचंद, समाज की सम्पूर्ण प्रगति के विवरण** को इतिहास मानते हैं।[29] **हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने इतिहास को **जीवंत मनुष्य की विजय यात्रा की कथा** कहा है।[30] **नित्यानंद तिवारी** इतिहास को **अपनी सामयिक स्थिति को परिभाषित** करने का उपक्रम मानते हैं।[31] **जी॰सी॰ पांडे** की दृष्टि में 'ऐतिहासिक प्रक्रिया का वास्तविक अर्थ–आत्मबोध की गवेषणा के रूप में' है।[32] **गिरिजाषंकर प्रसाद मिश्र** 'अतीत की मूल्यवान वस्तुओं की सुरक्षा के अतिरिक्त' और कुछ नहीं मानते।[33] **सैयद हसन अस्करी** इतिहास का मुख्य सरोकार 'साक्ष्य आधारित समग्र स्थिति के निदान' को घोषित किया है।[34] हिन्दी काव्य की सामाजिक भूमिका में **डॉ॰ शंभूनाथ**[35] इतिहास को 'मानव चेतना की सक्रियता का विवेचनात्मक अभिलेख' मानते हैं। उनके अनुसार 'इतिहास मानव की विकास प्रक्रिया का ही दूसरा नाम है। **श्री यषदेव शल्य** के अनुसार "इतिहास अपनी मूल्यवत्ता के कारण नेय, वहनीय, धारणीय होता है।"[36]

इस प्रकार यहाँ अ**तीतपरकता, अन्वेषण, सामाजिकता, मानवीय गरिमा** की प्रतिष्ठा व विकास **सामयिकता, आत्मषोध, मूल्यवान की रक्षा** तथा **निष्कर्षात्मकता** के लक्षण स्पष्टतः देखे जा सकते हैं।

इतिहास के अर्थ का विस्तृत विवेचन करने के उपरान्त हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि अतीत मनुष्य की स्मरण शक्ति का स्वाभाविक प्रतिफलन है। चाहकर भी उससे मुक्त होना संभव नहीं। मनुष्य को संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी इसलिए भी कहा जा सकता है कि उसने प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं और गुणों को अपने लिए सर्वाधिक हितकर ही नहीं बनाया बल्कि कल्पनातीत विकास भी किया। ईष्वर ने सृष्टि

का निर्माण एक बार ही किया है लेकिन मनुष्य नित नई सृष्टियों का सृजन करने में रत है। मनुष्य को बनाकर ईष्वर भी कृतार्थ हुआ होगा। **यदि वह होगा तो!**

इस मनुष्य ने अपने बृहद् अतीत को कभी बोझ न बनने दिया। उसने अतीत को एकत्रित किया, रक्षित किया, क्रमबद्ध किया, सुसंबद्ध किया, विष्लेषित किया, अन्वेषित किया, सार–असार को पहचाना, वैषिष्ट्य को रेखांकित किया, महानता को स्थापित किया, कहानी बनाया, विचार बनाया, ज्ञान बनाया, सभी से जोड़ा (समस्त मानव समाज व समस्त ज्ञान शाखाओं से) अपनी रुचि से ग्रहण किया, अपनी मति से पुनर्रचना की, वर्तमान से लड़ने का उपकरण बनाया, भविष्य से बचने का रक्षा कवच बनाया, अपनी विजय गाथा का वाहक बनाया और इस तरह मानव कल्याण के महत् उद्देष्य से पूरित कर अपने को सिद्ध किया। यही है **इतिहास** का इतिहास। अपार है उसकी अर्थ–धारण क्षमता।

अन्ततः संक्षेप में, **अतीत की घटनाओं का ऐसा अध्ययन इतिहास कहलाने का अधिकारी है जो समसामयिक चुनौतियों से टकराने में सम्पूर्ण मानव समाज का साथ दे और उसे भविष्य के लिए भी आष्वस्त कर सके।**

संदर्भ सूची

[1] रामविलास शर्मा – भारतीय नवजागरण और यूरोप, पृ॰ 328

[2] सं॰ द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी – पंडित तारिणीष झा, पृ॰ 211

[3] निरुक्त 2–3–1 पर दुर्गाचार्य की वृत्ति, उद्धृत आनंदनारायण शर्मा, हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्षन, पृ॰ 1

[4] लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय – इतिहास और साहित्येतिहास, पृ॰ 17

[5] ॅम्ठैजम्तै क्प्बज्व्छ ।त्ल व्थ् ज्भ्म म्छळस्प्ै र ।छळन् ।ळम्ए च्च 459

[6] फ्रैंक वैन आलस्ट, उद्धृत – इतिहास स्वरूप एवं सिद्धान्त – सं॰ गोविन्दचन्द्र पांडेय, पृ॰ 1

[7] वेदप्रकाष – साहित्य इतिहासकारों की दृष्टि मीमांसा, पृ॰ 2

[8] क्रमशः पृ॰ 285 व पृ॰ 295, उर्दू–हिन्दी शब्दकोष, संकलनकर्ता–मुहम्मद मुस्तफाखाँ 'मद्दाह', उत्तरप्रदेष हिन्दी संस्थान, लखनऊ

[9] संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर

[10] रामचन्द्र वर्मा – मानक हिन्दी कोष भाग–५, पृ॰ 307

[11] अरविंद कुमार और कुसुम कुमार – सहज समान्तर कोष, पृ॰ 143

[12] सं॰ सत्यप्रकाष, बलभद्र प्रसाद मिश्रा – मानक अंग्रेजी हिन्दी कोष, पृ॰

13 ˘मैज्त्रै क्प्बज्प्वछ ।तल ध्थ् ज्भ्म म्छळस्प्भ् स्।छळन्।ळम्ए च्ण 459

14 म्क्ण्ज्म्क ठल. श्रन्स्स्। म्स्स्प्व्ज्ज. व्थ्व्त्क क्प्बज्प्वछ ।तल –ज्भ्ै।न्त्ैए च्ण 352

15 अमरनाथ – हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, पृ० 103

16 प्र०सं० धीरेन्द्र वर्मा – हिन्दी साहित्य कोष, भाग–1

17 प्र०सं० गणपतिचन्द्र गुप्त – हिन्दी भाषा एवं साहित्य विष्वकोष, भाग–1, पृ० 80

18 लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय' – भारतीय संस्कृति कोष, पृ० 116

19 म्छब्ल्ब्स्व्च्।म्क्प्। ठत्प्ज।छछप्ब्।ए टवस्न्डम.11ए च्ण 529

20 रेनियर, उद्धृत – गोविन्दचन्द्र पांडेय – इतिहास स्वरूप एवं सिद्धान्त, पृ० 03

21 चार्ड एण्ड ओग्डन उद्धृत – गोविन्दचन्द्र पांडेय – इतिहास स्वरूप एवं सिद्धान्त, पृ० 209

22 उद्धृत झारखंड चौबे – इतिहास दर्षन, पृ० 03

23 फ्रैक वैन आलस्ट – इतिहास स्वरूप एवं सिद्धांत, सं० गोविन्द चन्द्र पांडे, पृ० 1

24 पुरा नववं भवति – यास्क निरुक्त, 3/19, उद्धृत आनंद नारायण शर्मा – हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्षन, पृ० 03

25 आख्यानं पूर्ववृत्तोक्तिः – विष्वनाथ, साहित्य दर्पण 6/11, उद्धृत आनंदनारायण शर्मा – हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्षन, पृ० 6

26 महाभारत, आदिपर्व, क्रमषः 2/385, 1/17, 2/37, उद्धृत आनंदनारायण शर्मा – हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्षन, पृ० 6–7

27 आनंदनारायण शर्मा – हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्षन, पृ० 7

28 नलिन विलोचन शर्मा – हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्षन, पृ० 6–7

29 प्रेमचंद – साहित्य का उद्देष्य, पृ० 32

30 हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य का आदिकाल, पृ० 78

31 नित्यानंद तिवारी – आ० सा० और इतिहास बोध, पृ० 15

32 उद्धृत गोविन्द चन्द्र पांडे – इतिहास स्वरुप और सिद्धांत, पृ० 20

33 उद्धृत गोविन्द चन्द्र पांडे – इतिहास स्वरुप और सिद्धांत, पृ० 83

34 सैयद हसन अस्करी – साहित्य, इतिहास और आधुनिकता बोध, पृ० 161

35 शम्भूनाथ – हिन्दी काव्य की सामाजिक भूमिका, पृ० 31

36 उद्धृत गोविन्द चन्द्र पांडे – इतिहास स्वरुप और सिद्धांत, पृ० 298